रामरक्षास्तोत्रम्

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

संस्करण : फरवरी २००७, सम्वत् २०६३

२० ६६-
९५८८/३
..७८

मूल्य : ४ रुपये मात्र।

© सर्वाधिकार : प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers
Khemraj Shrikrishnadass
Prop: Shri Venkateshwar Press
Khemraj Shrikrishnadass Marg,
7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.khe-shri.com
E-mail : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass
Prop. Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400004,
at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate,
Pune -411 013.

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

ॐ

रामरक्षास्तोत्रम्

'रामरक्षाकवच'की सिद्धिकी विधि

नवरात्रमें प्रतिदिन नौ दिनोंतक ब्राह्म-मुहूर्तमें नित्य-कर्म तथा स्नानादिसे निवृत्त हो शुद्ध वस्त्र धारणकर कुशाके आसनपर सुखासन लगाकर बैठ जाइये। भगवान् श्रीरामके कल्याणकारी स्वरूपमें चित्तको एकाग्र करके इस महान् फलदायी स्तोत्रका कम-से-कम ग्यारह बार और यदि यह न हो सके तो सात बार नियमित रूपसे प्रतिदिन पाठ कीजिये। पाठ करनेवालेकी श्रीरामकी शक्तियोंके प्रति जितनी अखण्ड श्रद्धा होगी, उतना ही फल प्राप्त होगा। वैसे 'रामरक्षाकवच' कुछ लंबा है, पर इस संक्षिप्त रूपसे भी काम चल सकता है। पूर्ण शान्ति और विश्वाससे इसका जाप होना चाहिये, यहाँतक कि यह कण्ठस्थ हो जाय।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विनियोगः

अस्य श्रीरामरक्षास्तोत्रमंत्रस्य बुधकौशिकऋषिः, श्रीसीतारामचंद्रो देवता, अनुष्टुप् छंदः, सीता शक्तिः, श्रीमद्धनुमान्कीलकं, श्रीसीतारामचंद्रप्रीत्यर्थं रामरक्षा स्तोत्र मन्त्रजपे विनियोगः ॥

इस रामरक्षास्तोत्र-मन्त्रके बुधकौशिक ऋषि हैं, सीता और रामचन्द्र देवता हैं, अनुष्टुप् छन्द है, सीता शक्ति हैं, श्रीमान् हनुमान्जी कीलक हैं तथा श्रीरामचन्द्रजीकी प्रसन्नताके लिये रामरक्षास्तोत्रके जपमें विनियोग किया जाता है ।

ध्यानम्

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं
पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम्।
वामाङ्कारूढसीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं
नानालंकारदीप्तं दधतमरुजटामंडनं रामचन्द्रम् ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

जो धनुष-बाण धारण किये हुए हैं, बद्ध पद्मासनसे विराजमान हैं, पीताम्बर पहने हुए हैं, जिनके प्रसन्न नयन नूतन कमलदलसे स्पर्धा करते तथा वामभागमें विराजमान श्रीसीताजीके मुखकमलसे मिले हुए हैं, उन आजानुबाहु, मेघश्याम, नाना प्रकारके अलंकारोंसे विभूषित तथा विशाल जटाजूटधारी श्रीरामचन्द्रजीका ध्यान करे।

स्तोत्रम्

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम् ।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ॥ १ ॥

श्रीरघुनाथजीका चरित्र सौ करोड़ विस्तारवाला है और उसका एक-एक अक्षर भी मनुष्योंके महान् पापोंको नष्ट करनेवाला है ॥ १ ॥

ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम् ।
जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमण्डितम् ॥ २ ॥
सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तंचरांतकम् ।
स्वलीलया जगत्रातुमाविर्भूतमजं विभुम् ॥ ३ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

रामरक्षां पठेत्प्राज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम् ।
शिरो मे राघवः पातु भालं दशरथात्मजः ॥ ४ ॥

जो नीलकमलके समान श्यामवर्ण, कमल-नयन, जटाओंके मुकुटसे सुशोभित, हाथोंमे खड्ग, तूणीर, धनुष और बाण धारण करनेवाले, राक्षसोंके संहारकारी तथा संसारकी रक्षाके लिये अपनी लीलासे ही अवतीर्ण हुए हैं, उन अजन्मा और सर्वव्यापक भगवान् रामका जानकी और लक्ष्मणजीके सहित स्मरण कर प्राज्ञ पुरुष इस सर्वकामप्रदा और पापविनाशिनी रामरक्षाका पाठ करे । मेरे सिरकी राघव और ललाटकी दशरथात्मज रक्षा करें ॥ २–४ ॥

कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती ।
घ्राणं पातु मख त्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः ॥ ५ ॥

कौसल्यानन्दन नेत्रोंकी रक्षा करें, विश्वामित्रप्रिय कानोंको सुरक्षित रक्खें तथा यज्ञरक्षक घ्राणकी और सौमित्रिवत्सल मुखकी रक्षा करें ॥ ५ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

जिह्वां विद्यानिधिः पातु कंठं भरतवंदितः ॥
स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेश कार्मुकः ॥६॥

मेरी जिह्वाकी विद्यानिधि, कण्ठकी भरतवन्दित, कंधोंकी दिव्यायुध और भुजाओंकी भग्नेशकार्मुक (महादेवजीका धनुष तोड़नेवाले) रक्षा करें ॥ ६ ॥

करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित्।
मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जांबवदाश्रयः ॥ ७ ॥

हाथोंकी सीतापति, हृदयकी जामदग्न्यजित् (परशुरामजीको जीतनेवाले), मध्यभागकी खरध्वंसी (खर नामके राक्षसका नाश करनेवाले) और नाभिकी जाम्बवदाश्रय (जाम्बवान्के आश्रयस्वरूप) रक्षा करें ॥७॥

सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः।
ऊरू रघूत्तमः पातु रक्षःकुलविनाशकृत् ॥ ८ ॥

कमरकी सुग्रीवेश (सुग्रीवके स्वामी), सक्थियोंकी हनुमत्प्रभु और ऊरुओंकी राक्षसकुल-विनाशक रघुश्रेष्ठ रक्षा करें ॥ ८ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

जानुनी सेतुकृत्पातु जंघे दशमुखांतकः ।
पादौ बिभीषणःश्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः ॥९॥

जानुओंकी सेतुकृत्, जङ्घाओंकी दशमुखान्तक (रावणको मारनेवाले), चरणोंकी विभीषणश्रीद (विभीषणको ऐश्वर्य प्रदान करनेवाले) और सम्पूर्ण शरीरकी श्रीराम रक्षा करें ॥ ९ ॥

एतां रामबलोपेतां रक्षांयः सुकृती पठेत् ।
सचिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत् ॥ १० ॥

जो पुण्यवान् पुरुष रामबलसे सम्पन्न इस रक्षाका पाठ करता है, वह दीर्घायु, सुखी, पुत्रवान्, विजयी और विनयसम्पन्न हो जाता है ॥ १० ॥

पातालभूतलव्योमचारिणश्छद्मचारिणः ।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः ॥ ११ ॥

जो जीव पाताल, पृथ्वी अथवा आकाशमें विचरते हैं और जो छद्मवेशसे घूमते रहते हैं, वे रामनामोंसे सुरक्षित मनुष्यको देख भी नहीं सकते ॥ ११ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

रामेति रामभद्रेति रामचंद्रेति वा स्मरन् ।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिंच विंदति ॥ १२ ॥

'राम', 'रामभद्र,' 'रामचन्द्र'—इन नामोंका स्मरण करनेसे मनुष्य पापोंसे लिप्त नहीं होता तथा भोग और मोक्ष प्राप्त कर लेता है ॥ १२ ॥

जगज्जैत्रैकमंत्रेण रामनाम्नाऽभिरक्षितम्।
यः कंठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः ॥ १३ ॥

जो पुरुष जगत्को विजय करनेवाले एकमात्र मन्त्र रामनामसे सुरक्षित इस स्तोत्रको कण्ठमें धारण करता है (अर्थात् इसे कण्ठस्थ कर लेता है), सम्पूर्ण सिद्धियाँ उसके हस्तगत हो जाती हैं ॥ १३ ॥

वज्रपञ्जरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत् ।
अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमङ्गलम् ॥ १४ ॥

जो मनुष्य वज्रपञ्जर नामक इस रामकवचका स्मरण करता है, उसकी आज्ञाका कहीं उल्लङ्घन नहीं होता और उसे सर्वत्र जय और मङ्गलकी प्राप्ति होती है ॥ १४ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

आदिष्टवान्यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः ।
तथा लिखितवान्प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः॥ १५॥

श्रीशंकरने रात्रिके समय स्वप्नमें इस रामरक्षाका जिस प्रकार आदेश दिया था, उसी प्रकार प्रातःकाल जागनेपर बुधकौशिकने इसे लिख दिया ॥ १५ ॥

आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम् ।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामःश्रीमान्सनः प्रभुः ॥ १६ ॥

जो मानो कल्पवृक्षोंके बगीचे हैं तथा समस्त आपत्तियों-का अन्त करनेवाले हैं, जो तीनों लोकोंमें परम सुन्दर हैं, वे श्रीमान् राम हमारे प्रभु हैं ॥ १६ ॥

तरुणौ रूपसंपन्नौ सुकुमारौ महाबलौ॥
पुंडरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनांबरौ ॥ १७ ॥
फलमूलाशिनौ दांतौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥ १८ ॥
शरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम् ॥
रक्षःकुलनिहंतारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ ॥ १९ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

जो तरुण अवस्थावाले, रूपवान्, सुकुमार, महाबली, कमलके समान विशाल नेत्रोंवाले, चीरवस्त्र और कृष्णमृग-चर्मधारी, फल-मूल, आहार करनेवाले, संयमी, तपस्वी, ब्रह्मचारी, सम्पूर्ण जीवोंको शरण देनेवाले, समस्त धनुर्धारियोंमें श्रेष्ठ और राक्षसकुलका नाश करनेवाले हैं, वे रघुश्रेष्ठ दशरथकुमार राम और लक्ष्मण दोनों भाई हमारी रक्षा करें ॥ १७–१९ ॥

आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशा
वक्षयाशुगनिषंगसंगिनौ ।
रक्षणाय मम राम लक्ष्मणावग्रतः
पथि सदैव गच्छताम् ॥२०॥

जिन्होंने संधान किया हुआ धनुष ले रक्खा है, जो बाणका स्पर्श कर रहे हैं तथा अक्षय बाणोंसे युक्त तूणीर लिये हुए हैं, वे राम और लक्ष्मण मेरी रक्षा करनेके लिये मार्गमें सदा ही मेरे आगे चलें ॥ २० ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

सन्नद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा ।
गच्छन्मनोऽरथोस्माकं रामः पातु सलक्ष्मणः ॥२१॥

सर्वदा उद्यत, कवचधारी, हाथमें खड्ग लिये, धनुष-बाण धारण किये तथा युवा अवस्थावाले भगवान् राम लक्ष्मणजीसहित आगे-आगे चलकर हमारे मनोरथोंकी रक्षा करें ॥ २१ ॥

रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली ।
काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णः कौसल्येयो रघूत्तमः ॥२२॥
वेदांतवेद्योयज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः ।
जानकीवल्लभः श्रीमानप्रमेयपराक्रमः ॥२३॥
इत्येतानि जपेन्नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः ।
अश्वमेधाधिकं पुण्यं संप्राप्नोति न संशयः ॥२४॥

(भगवान्का कथन है कि) राम, दाशरथि, शूर, लक्ष्मणानुचर, बली, काकुत्स्थ, पुरुष, पूर्ण, कौसल्येय, रघूत्तम, वेदान्तवेद्य, यज्ञेश, पुराणपुरुषोत्तम, जानकी-वल्लभ, श्रीमान और अप्रमेयपराक्रम—इन नामोंका

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

नित्यप्रति श्रद्धापूर्वक जप करनेसे मेरा भक्त अश्वमेधयज्ञसे भी अधिक फल प्राप्त करता है—इसमें कोई संदेह नहीं है ॥ २२—२४ ॥

रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम् ।
स्तुवंति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नराः ॥२५॥

जो लोग दूर्वादलके समान श्यामवर्ण, कमलनयन, पीताम्बरधारी भगवान् रामका इन दिव्य नामोंसे स्तवन करते हैं, वे संसारचक्रमें नहीं पड़ते ॥ २५ ॥

रामं लक्ष्मण पूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुंदरं
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम् ।
राजेन्द्रं सत्यसंधं दशरथतनयं श्यामलं शांतिमूर्तिं
वंदे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवंरावणारिम् ॥२६॥

लक्ष्मणजीके पूर्वज, रघुकुलमें श्रेष्ठ, सीताजीके स्वामी, अतिसुन्दर, ककुत्स्थकुलनन्दन, करुणासागर, गुणनिधान, ब्राह्मणभक्त, परम धार्मिक, राजराजेश्वर, सत्यनिष्ठ, दशरथपुत्र, श्याम और शान्तमूर्ति, सम्पूर्ण लोकोंमें

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

सुन्दर, रघुकुलतिलक, राघव और रावणारि भगवान् रामकी मैं वन्दना करता हूँ ॥ २६ ॥

रामाय रामभद्राय रामचंद्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥२७॥

राम, रामभद्र, रामचन्द्र, विधातृस्वरूप, रघुनाथ, प्रभु सीतापतिको नमस्कार है ॥ २७ ॥

श्रीराम राम रघुनंदन राम राम
श्रीराम राम भरताग्रज राम राम ।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम
श्रीराम राम शरणं भव राम राम ॥ २८ ॥

हे रघुनन्दन श्रीराम ! हे भरताग्रज भगवान् राम ! हे रणधीर प्रभु राम ! आप मेरे आश्रय होइये ॥ २८ ॥

श्रीरामचंद्रचरणौ मनसा स्मरामि
श्रीरामचंद्रचरणौ वचसा गृणामि ।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि
श्रीरामचंद्रचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ २९ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

मैं श्रीरामचन्द्रके चरणोंका मनसे स्मरण करता हूँ, श्रीरामचन्द्रके चरणोंका वाणीसे कीर्तन करता हूँ, श्रीरामचन्द्रके चरणोंको सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ तथा श्रीरामचन्द्रके चरणोंकी शरण लेता हूँ ॥ २९ ॥

माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः
स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालुर्नान्यं
जाने नैव जाने न जाने ॥ ३० ॥

राम मेरी माता हैं, राम मेरे पिता हैं, राम स्वामी हैं और राम ही मेरे सखा हैं। दयामय रामचन्द्र ही मेरे सर्वस्व हैं, उनके सिवा और किसीको मैं नहीं जानता—बिल्कुल नहीं जानता ॥ ३० ॥

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामेतु जनकात्मजा।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वंदे रघुनंदनम् ॥ ३१ ॥

जिनकी दायीं ओर लक्ष्मणजी, बायीं ओर जानकीजी और सामने हनुमान्‌जी विराजमान हैं, उन रघुनाथजीकी मैं वन्दना करता हूँ ॥ ३१ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

लोकाभिरामं रणरंगधीरं
राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम् ।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं
श्रीरामचंद्रं शरणं प्रपद्ये ॥३२॥

जो सम्पूर्ण लोकोंमें सुन्दर, रणक्रीडामें धीर, कमलनयन, रघुवंशनायक, करुणामूर्ति और करुणाके भण्डार हैं, उन श्रीरामचन्द्रजीकी मैं शरण लेता हूँ ॥ ३२ ॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं
जितेंद्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं
श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥३३॥

जिनकी मनके समान गति और वायुके समान वेग है, जो परम जितेन्द्रिय और बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ हैं, उन पवननन्दन वानराग्रगण्य श्रीरामदूतकी मैं शरण लेता हूँ ॥ ३३ ॥

कूजंतं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम् ।
आरुह्य कविताशाखां वंदे वाल्मीकिकोकिलम् ॥ ३४ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

कवितामयी डालीपर बैठकर मधुर अक्षरोंवाले राम-राम इस मधुर नामको कूजते हुए वाल्मीकिरूप कोकिलकी मैं वन्दना करता हूँ ॥ ३४ ॥

आपदामपिहर्तारं दातारं सर्वसंपदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामंभूयो भूयो नमाम्यहम् ॥ ३५ ॥

आपत्तियोंको हरनेवाले तथा सब प्रकारकी सम्पत्ति प्रदान करनेवाले लोकाभिराम भगवान् रामको मैं बारंबार नमस्कार करता हूँ ॥ ३५ ॥

भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसंपदाम् ।
तर्जनं यमदूतानां रामरामेति गर्जनम् ॥३६॥

'राम-राम' ऐसा घोष करना सम्पूर्ण संसारबीजोंको भून डालनेवाला, समस्त सुख-सम्पत्तिकी प्राप्ति करानेवाला तथा यमदूतोंको भयभीत करनेवाला है ॥ ३६ ॥

रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोस्म्यहं
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर ॥३७॥

राजाओंमें श्रेष्ठ श्रीरामजी सदा विजयको प्राप्त होते हैं। मैं लक्ष्मीपति भगवान् रामका भजन करता हूँ। जिन रामचन्द्रजीने सम्पूर्ण राक्षससेनाका ध्वंस कर दिया था, मैं उनको प्रणाम करता हूँ। रामसे बड़ा और कोई आश्रय नहीं है। मैं उन रामचन्द्रजीका दास हूँ। मेरा चित्त सदा राममें ही लीन रहे; हे राम! आप मेरा उद्धार कीजिये ॥ ३७ ॥

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्रनाम तुल्यंतद्राम नाम वरानने ॥३८॥

(श्रीमहादेवजी पार्वतीजीसे कहते हैं—) हे सुमुखि! रामनाम विष्णुसहस्रनामके तुल्य है। मैं सर्वदा 'राम, राम, राम' इस प्रकार मनोरम रामनाममें ही रमण करता हूँ ॥ ३८ ॥

इति श्रीबुधकौशिकमुनिविरचितं श्रीरामरक्षास्तोत्रं सम्पूर्णम्।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

श्रीरामस्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणम् ।
नवकञ्ज लोचन कञ्ज मुखकर कञ्जपद कञ्जारुणम् ॥
कंदर्प अगणित अमित छवि नव नील नीरज सुन्दरम् ।
पटपीत मानहुँ तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरम्॥
भजु दीनबन्धु दिनेश दानव दैत्यवंशनिकन्दनम्।
रघुनन्द आनंदकंद कोशलचन्द दशरथ नन्दनम्॥
सिरकीट कुण्डल तिलक चारु उदार अंग विभूषणम् ।
आजानुभुज सर चापधर संग्राम जित खरदूषणम् ॥
इति वदति तुलसीदास शङ्कर शेष मुनि मनरञ्जनम् ।
मम हृदयकञ्ज निवास कुरु कामादिखलदलगञ्जनम्॥
मनजाहि राचो मिलहि सो वर सहजसुन्दर सांवरो।
करुणानिधान सुजान शील सनेह जानत रावरो।
एहि भाँति गौरि अशीस सुनि सिय सहित हिय हर्षित अली।
तुलसी भवानिहिं पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली।

सो०—जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हर्ष न जात कहि।
मंजुल मंगल मूल, वाम अंग फरकन लगे ॥
सियावर रामचन्द्रकी जय ॥ १ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

श्रीरामाष्टक

हे रामा पुरुषोत्तमा नरहरे नारायणा केशवा ॥ १ ॥
गोविंदा गरुडध्वजा गुणनिधे दामोदरा माधवा ॥२॥
हे कृष्णा कमलापते यदुपते सीतापते श्रीपते ॥ ३ ॥
वैकुण्ठाधिपते चराचरपते लक्ष्मीपते पाहि माम् ॥४॥
आदौ रामतपोवनादि गमनं हत्वा मृगं कांचनम्,
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीव सम्भाषणम् ।
वालीनिर्दलनं समुद्रतरणं लंकापुरीदाहनम्
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननं एतद्धि रामायणम् ॥ ५ ॥

पुस्तकें मिलने के स्थान

१) खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
खेतवाडी, मुंबई - ४०० ००४.

२) खेमराज श्रीकृष्णदास,
६६, हडपसर इण्डस्ट्रिअल इस्टेट
पुणे - ४११ ०१३.

३) गंगा विष्णु श्रीकृष्णदास
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
बुक डिपो,
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि. ठाणे - महाराष्ट्र)

४) खेमराज श्रीकृष्णदास,
चौक - वाराणसी (उ.प्र.)

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection